मधुबन ओम् शान्ति अंक 363 अक्टूबर 2022

पत्र-पुष्प

"ज्ञानयुक्त रहम के साथ स्वयं में रूहानियत का रूहाब भी धारण करो"

दादी जी की शुभ प्रेरणायें 23-09-22

प्राणप्यारे अव्यक्तमूर्त मात-पिता बापदादा के अति स्नेही, सदा परमात्म याद की छत्रछाया में रह माया की छाया से बचने वाले, सदा खुश और बेफिक्र रह कमजोर आत्माओं को खुशी व हिम्मत दिलाने वाले मास्टर दाता, रहमदिल निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - मीठे बापदादा ने हम सभी बच्चों को माया की छाया से बचने का एक ही उपाय बताया है बच्चे, तुम सदा परमात्म याद की छत्रछाया में रहो। सदा खुश रहकर सबको खुशी का दान दो। कोई भी कमजोरी माया का आह्वान करती है। अगर स्वप्न में भी माया की छाया पड़ गई तो परेशान होते रहेंगे, युद्ध करनी पड़ेगी। अभी तो समय प्रमाण बापदादा विशेष इशारा देते हैं बच्चे, चारों ओर विश्व में अनेक परवश, अन्जान, परेशान आत्मायें दु:खी अशान्त हैं, ऐसे समय पर आप बच्चे सभी पर दया और रहम की दृष्टि डालो। सबके प्रति महादानी, वरदानी बनो। स्वयं सन्तुष्ट मणियां बन सर्व को सन्तोष दो। अभी यह सोचना बन्द करो कि यह ऐसे क्यों करता? यह क्यों कहता? इसके बजाए ज्ञानयुक्त रहमदिल बन, रूहानियत का रूहाब धारण कर अपने गुणों का, अपनी शक्तियों का सभी को सहयोग दो। बोलो, इस दु:ख दर्द की दुनिया का परिवर्तन करने के लिए स्वयं को सम्पन्न बनाने का तीव्र पुरुषार्थ चल रहा है ना! बाबा कहते बच्चे, अब परिवर्तन की शुभ भावना को तीव्र करो। मास्टर दयालु, कृपालु बनो।

वर्तमान समय एक ओर बाबा बेहद की खूब सेवायें करवा रहे हैं, दूसरी ओर सब तरफ शक्तिशाली योग तपस्या द्वारा पुराने संस्कारों को समाप्त करने की अच्छी लहर चल रही है। इस सितम्बर मास में तो शान्तिवन में लगातार बड़े-बड़े सम्मेलन बहुत ही सफलता पूर्वक सम्पन्न हुए हैं। अनेक सम्बन्ध-सम्पर्क वाली आत्मायें बाबा के घर में आकर खूब रिफ्रेश हो बहुत अच्छी अनुभूतियां करके जाती हैं। यह सब समाचार तो आप साइंस के साधनों द्वारा देखते, सुनते रहते हो।

हम तो बाबा की कमाल देख यही गीत गाती, वाह बाबा वाह! वाह आपके अथक सेवाधारी बच्चे वाह! कैसे सभी बाबा को प्रत्यक्ष करने के लिए अथक बन दिन-रात सेवायें कर रहे हैं। अब तो यही आवाज चारों ओर गूंजना है कि यही है, यही है.... इसी से ही परमात्म कार्य की प्रत्यक्षता होगी और मुक्ति का गेट खुलेगा।

बाकी आप सभी स्व-पुरुषार्थ और सेवाओं का बैलेन्स रख सदा संगम की मौजों का अनुभव कर रहे होंगे! अभी तो शान्तिवन में अव्यक्त बापदादा के मिलन की अलौकिक महफिल में सबके स्वागत की तैयारियां चल रही हैं। देश विदेश के बेहद परिवार से सम्मुख मिलन मनाने, एक दो के अनुभवों का लाभ लेने और परमात्म शक्तियों का अलौकिक अनुभव करने की यही सुहावनी घड़ियां हैं। अच्छा - सभी को बहुत-बहुत स्नेह भरी याद..

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.रतनमोहिनी

ये अव्यक्त इशारे

अपने रहमदिल दातापन के स्वरूप को प्रत्यक्ष करो

1) बापदादा चाहते हैं कि समय प्रमाण अब हर एक बच्चा अपनी शक्तिशाली वृत्ति द्वारा साधारण समय, साधारण संकल्प को परिवर्तन कर अपने रहमदिल दातापन के स्वरूप को प्रत्यक्ष करे। जैसे पुराने वर्ष को विदाई दे नया वर्ष मनाते हो ऐसे अब पुराने संस्कारों, पुरानी स्मृतियों, पुरानी कमजोरियों को भी विदाई दे दातापन का नया उमंग-उत्साह रख विशेष हिम्मतवान बनो।

2) वर्तमान समय महादानी बनने के लिये विशेष रहमदिल का गुण इमर्ज रूप में चाहिए। जब आपके जड़ चित्र वरदान दे रहे हैं, तो आप भी चैतन्य में रहमदिल बन बांटते जाओ क्योंकि परवश आत्मायें हैं। कभी भी ये नहीं सोचो कि ये तो सुनने वाले नहीं हैं, ये तो चलने वाले नहीं हैं, नहीं। आप रहमदिल बन देते जाओ।

3) अपने परिवार के अन्जान, परेशान आत्माओं के ऊपर रहमदिल बनो, दिल से रहम आये। विश्व की अन्जान आत्माओं के लिए भी रहम चाहिए और साथ-साथ ब्राह्मण-परिवार के पुरुषार्थ की तीव्रगति के लिए वा स्व-उन्नति के लिए भी रहमदिल की आवश्यकता है। स्व-उन्नति के लिए स्व पर जब रहमदिल बनते हैं तो रहमदिल आत्मा को सदा बेहद की वैराग्यवृत्ति स्वत: ही आती है।

4) बिना ज्ञान के रहम कभी नुकसान भी करता है लेकिन ज्ञानयुक्त रहम कभी भी किसी आत्मा के प्रति ईर्ष्या वा घृणा का भाव दिल में उत्पन्न करने नहीं देगा। ज्ञानयुक्त रहम के साथ-साथ स्वयं में रूहानियत का रूहाब भी अवश्य होता है, अकेला रहम नहीं होता लेकिन रहम और रूहाब दोनों का बैलेंस रहता है।

5) जैसे बाप को रहम आता है कि दाता के बच्चे और अल्पकाल की प्राप्ति के लिए चाहिए-चाहिए के नारे लगा रहे हैं। ऐसे आप मास्टर दाता प्राप्ति स्वरुप बच्चों को विश्व की आत्माओं प्रति रहम आना चाहिए कि हमारे भाई अल्पकाल की इच्छा में कितने भटक रहे हैं! दाता के बच्चे अपने भाईयों के ऊपर दया और रहम की दृष्टि डालो। महादानी बनो, वरदानी बनो। चमकती हुई सन्तुष्ट मणियां बन सर्व को सन्तोष दो।

6) रहम का अर्थ है – निर्बल आत्मा को बल देना, हिम्मत देना। आत्माओं के दु:ख का संकल्प तो आप मास्टर सुखदाता आत्माओं के पास पहुँचता ही है। जैसे वहाँ दु:ख की लहर है, ऐसे ही विशेष आत्माओं में सेवा की विशेष लहर चले – देना है, कुछ करना है। क्या किया – वो हर एक को सेवा का एक्स्ट्रा चार्ट चेक करना चाहिए। जैसे साधारण सेवा चलती है, वो तो चलती है लेकिन वर्तमान समय वायुमण्डल द्वारा, वृत्ति द्वारा सेवा का विशेष अटेन्शन रखो, समय निकालकर विशेष लाइट हाउस बन विश्व की आत्माओं को लाइट दो, सकाश दो।

7) ब्राह्मण आत्मा को कभी भी किसी आत्मा के प्रति घृणा नहीं आ सकती। रहम आयेगा, घृणा नहीं क्योंकि जानते हैं हर आत्मा परवश अर्थात् माया के वश है। तो परवश के ऊपर दया आती है, रहम आता है, घृणा नहीं, जहाँ घृणा नहीं वहाँ क्रोध भी नहीं आयेगा।

8) हे इच्छा मात्रम् अविद्या आत्मायें, अल्पकाल की इच्छाओं के कारण देवता के बजाए लेवता नहीं बनो। देते जाओ, देते हुए गिनती नहीं करो। मैंने इतना किया, इसने नहीं किया, यह गिनती करना दातापन के संस्कार नहीं। फ्राकदिल बाप के बच्चे यह बातें गिनती नहीं करते। भण्डारे भरपूर हैं गिनती क्यों करते हो? सतयुग में भी कोई हिसाब-किताब, गिनती नहीं रखते। रॉयल फैमिली, राज्यवंशी मास्टर दाता होते हैं। वहाँ यह सौदेबाज़ी नहीं होगी। राज्यवंश अर्थात् दाता का घर, तो यह संस्कार अभी भरने हैं।

9) ज्यादा पुरुषार्थी जीवन में रहने से भी ऊपर अब दातापन की स्थिति में रहो। हर सेकेण्ड दाता बन देते चलो। तो आप सबका भी सेकेण्ड में हाईजम्प हो जायेगा। देने में बिज़ी होंगे तो माया भी बिज़ी देख वार करने के बजाए नमस्कार करेगी।

10) आपके सम्पर्क में जो भी आत्मा आये, उसे थोड़े समय में भी आप द्वारा शीतलता व शान्ति की अनुभूति होनी चाहिए जो हर-एक के मन में यह गुणगान हो कि यह कौनसा फरिश्ता था, जो सम्पर्क में आया। थोड़े समय में भी उस तड़पती हुई, भटकती हुई आत्मा को बहुतकाल की प्यास बुझाने का साधन व ठिकाना दिखाई देने लगे, इसको कहा जाता है – पारस के संग लोहा भी पारस हो जाए।

11) बापदादा चाहते हैं कि अब थोड़े समय के लिए पुरुषार्थ के प्रालब्ध स्वरूप बन जाओ। इसकी बहुत सहज विधि है – मास्टर दाता बनो। बाप से लिया है और लेते भी रहो लेकिन आत्माओं से लेने की भावना नहीं रखो – यह कर ले तो ऐसा हो। यह बदले तो मैं बदलूं, यह लेने की भावना है। ऐसा हो तो ऐसा हो, यह लेने की भावनायें हैं। ऐसा हो नहीं, ऐसा करके दिखाना है।

12) लक्ष्य रखो कि मुझे करना है, मुझे बायब्रेशन देना है, मुझे रहमदिल बनना है, मुझे गुणों का सहयोग देना है, मुझे शक्तियों का सहयोग देना है। लेना है तो एक बाप से लो। अगर और आत्माओं से भी मिलता है तो बाप का दिया हुआ ही मिलेगा। तो अब तक जो जमा किया है वह दो। और दे तो मैं दूं, नहीं। मुझे देना है।

13) यह ऐसा क्यों करता? यह क्यों कहता? अब यह सोचना बंद करो। रहमदिल बन अपने गुणों का, अपनी शक्तियों का सहयोग दो - इसको कहा जाता है मास्टर दाता, महा सहयोगी। अभी बापदादा सभी बच्चों के चेहरे पर सदा फरिश्ता रूप, वरदानी रूप, दाता रूप, रहमदिल, अथक, सहज योगी वा सहज पुरुषार्थी का रूप देखने चाहते हैं।

14) हे रहमदिल, विश्व कल्याणकारी आत्मायें अब सर्व के इन्तजार को समाप्त करो। आपके लिए सब रुके हुए हैं। आप सब मुक्त हो जाओ तो सर्व आत्मायें, प्रकृति, भक्त मुक्त हो जाएं। तो मुक्ति का दान देने वाले मास्टर दाता बनो। अभी आत्माओं को इच्छाओं से बचाओ, बिचारे बहुत दु:खी हैं, बहुत परेशान हैं, तो अभी रहमदिल बनो। रहम की लहर बेहद के वैराग्य वृत्ति द्वारा फैलाओ।

15) बापदादा चाहते हैं कि अब हर बच्चा पुरुषार्थ के प्रालब्ध स्वरूप बनें। अभी पुरुषार्थ कर रहा हूँ, पुरुषार्थ हो जायेगा, करके दिखायेंगे, यह शब्द समाप्त करो। इसकी बहुत सहज विधि है कि अब मास्टर दाता, मास्टर रहमदिल, मास्टर दयालू, मर्सीफुल बन जाओ। औरों के ऊपर रहम करने से स्वयं पर रहम आपेही आयेगा।

16) अभी ऐसी लहर फैलाओ - देना है, देना है, देना ही है। सैलवेशन लेना नहीं है, सैलवेशन देना है। तो यही पाठ पक्का कर लो - आज के दिन कितनी आत्माओं को नि:स्वार्थ सहयोग दिया! आप देना शुरु करेंगे, तो सबके पास वह लहर फैल जायेगी।

17) स्वमानधारी पुण्य आत्मा, रहमदिल दाता होने कारण गिरे हुए को ऊंचा उठायेंगे। 'क्यों गिरा', 'गिरना ही चाहिए', 'कर्मों का फल भोग रहे हैं', 'करेंगे तो जरूर पायेंगे'। स्वमानधारियों के संकल्प वा बोल इस प्रकार के नहीं हो सकते। उसमें रोब का अंश भी नहीं होगा, स्वमानधारी को देह-अभिमान कभी आ नहीं सकता।

18) वैसे ब्राह्मण, ब्राह्मण को दान नहीं कर सकते लेकिन सहयोग दे सकते हैं। तो महा दाता और महा सहयोगी बनो। दाता के बच्चे हो तो दाता बन देते चलो, तब ही भविष्य में हाथ से किसको देंगे नहीं लेकिन सदा आपके राज्य में हर आत्मा भरपूर रहेगी, यह इस समय के दाता बनने की प्रालब्ध है इसलिए हिसाब नहीं करना, इसने यह किया, इसने इतना बार किया, मास्टर दाता बन देते जाओ।

19) प्रकृति विजय का हार लेकर आप प्रकृतिपति आत्माओं का आवाह्न कर रही है। समय विजय का घण्टा बजाने के लिए आप भविष्य राज्य अधिकारी आत्माओं को देख रहा है। भक्त आत्मायें वह दिन याद कर रही हैं कि कब हमारे पूज्य देव आत्मायें हमारे ऊपर प्रसन्न हो हमें मुक्ति का वरदान देंगी! दु:खी आत्मायें पुकार रही हैं कि कब दु:ख हर्ता सुख कर्ता आत्मायें प्रत्यक्ष होंगी! तो हे रहमदिल, विश्व कल्याणकारी आत्मायें अभी इन्हों के इन्तजार को समाप्त करो। आप मुक्त हो जाओ तो सर्व आत्मायें, प्रकृति, भगत मुक्त हो जाएं। तो मुक्त बनो, मुक्ति का दान देने वाले मास्टर दाता बनो।

20) चाहे ब्राह्मण, चाहे और जो भी सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हैं उन्हों को कुछ न कुछ मास्टर दाता बनकर देते जाओ। नि:स्वार्थ बन खुशी दो, शान्ति दो, आनंद की अनुभूति कराओ, प्रेम की अनुभूति कराओ। देना है और देना माना स्वत: ही लेना। जो भी जिस समय, जिस रूप में सम्बन्ध-सम्पर्क में आये कुछ लेकर जाये। आप मास्टर दाता के पास आकर खाली नहीं जाये।

21) जैसे ब्रह्मा बाप के सामने कोई भी बच्चा आया तो कुछ न कुछ अनुभूति के बिना खाली नहीं गया। ऐसे आप भी चेक करो कि जो भी आया, मिला, कुछ दिया वा खाली गया? खजाने से जो भरपूर होते हैं वह देने के बिना रह नहीं सकते। तो अखुट, अखण्ड दाता बनो।

22) कोई मांगे या नहीं मांगे। दाता कभी यह नहीं देखता कि यह मांगे तो दें। अखुट महादानी, महादाता स्वयं ही देता है। तो समय अनुसार हर समय, दातापन की स्मृति को बढ़ाओ। स्व-उन्नति के प्रति वा सर्व के प्रति दाता-पन का भाव वा स्नेह इमर्ज रूप में दिखाई दे। कोई कैसा भी हो, क्या भी हो, मुझे देना है। सदा बेहद की वृत्ति हो, सदा सम्पन्न, सदा भरपूर रहो।

23) जो मास्टर दाता है वह सदा ही क्षमा का मास्टर सागर होगा। इस कारण जो हद के अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार हैं वो इमर्ज नहीं होंगे, मर्ज होंगे। मुझे देना है। कोई किसी भी

संस्कार के वश परवश आत्मा हो, उस आत्मा को भी सहयोग दो। तो किसी का भी हद का संस्कार आपको प्रभावित नहीं करेगा। कोई मान दे, कोई नहीं दे, वह नहीं दे लेकिन मुझे देना है। यह दातापन का स्वरूप अभी इमर्ज चाहिए।

24) समय की पुकार है - दाता बनो। सारे विश्व के आत्माओं की पुकार है - हे हमारे ईष्ट, देव-देवियां परिवर्तन करो। यह पुकार सुनने में आती है तो सैलवेशन दो। अपने दाता-पन का रूप इमर्ज करो। देना है। कोई भी आत्मा वंचित नहीं रह जाए, नहीं तो उल्हनों की मालायें पड़ेंगी।

25) जब बाप ने आप बच्चों को भरपूर कर दिया तो भरपूर आत्मा दाता बनो। लेने वाली नहीं। मुझे देना है। लेने के इच्छुक नहीं, देने के इच्छुक। और जितना देंगे, दाता बनेंगे उतना खजाना बढ़ता जायेगा। अगर आपने किसी को स्वमान दिया, तो दूसरे को देना अर्थात् अपना स्वमान बढ़ाना। लो नहीं, दो तो लेना हो ही जायेगा।

26) कोई भी बात हो जाए, उसमें भी ''दाता'' शब्द सदा याद रखना। इच्छा मात्रम् अविद्या। न सूक्ष्म लेने की इच्छा, न स्थूल लेने की इच्छा। दाता का अर्थ ही है इच्छा मात्रम् अविद्या, सम्पन्न। कोई अप्राप्ति अनुभव न हो जिसको पाने की इच्छा हो। सर्व प्राप्ति सम्पन्न बनो।

27) मास्टर दाता बनने के लिए अपने पास सर्व स्टॉक जमा करो, जितना स्टॉक होगा उतना ही दाता बन सकेंगे इसलिए एक तो अपने पास शुभ भावना, श्रेष्ठ कामना का भण्डार सदा भरपूर हो। कोई कैसी भी आत्मा हो लेकिन सदा हर आत्मा के प्रति शुभ भावना रखो। यह शुभ भावना ही सफलता को प्राप्त करायेगी। शुभ भावना अर्थात् रहमदिल। जैसे बाप अपकारियों पर उपकारी है, ऐसे ही आपके सामने कैसी भी आत्मा हो लेकिन अपने रहम की वृत्ति से, शुभ भावना से उसे परिवर्तन कर दो।

28) अभी आत्माओं की क्यु आपके सामने आयेगी ''हे मुक्तिदाता मुक्ति दो'' क्योंकि मुक्ति दाता के डायरेक्ट बच्चे हो, अधिकारी बच्चे हो। क्यु तैयार है लेकिन क्यों शब्द की कमजोरी का दरवाजा बन्द है इसलिए समस्याओं का दरवाजा ''क्यों'', शब्द को समाप्त करो।

29) हर संकल्प में नि:स्वार्थ सच्चा स्नेह, दिल का स्नेह, हर संकल्प में सहानुभूति, हर संकल्प में रहमदिल, दातापन की नेचुरल नेचर बन जाए - यह है स्नेह मिलन, संकल्प मिलन, विचार मिलन, संस्कार मिलन। इससे सर्व श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्माओं का सहयोग मिलता है, जो विश्व को सहयोगी सहज और स्वत: बना लेता है।

30) अभी आवश्यकता है रहमदिल बनने की क्योंकि कई बच्चे कमजोर होने के कारण अपनी शक्ति से कोई बड़ी समस्या से पार नहीं हो सकते, तो आप सहयोगी बनो। आजकल शिक्षा काम नहीं करती लेकिन शिक्षा के साथ शुभ भावना से रहमदिल बन उनके सहयोगी बन जाओ तो उनके दिल की दुआयें मिल जायेंगी।

31) अपनी वा अन्य आत्माओं की बीती हुई बातों को रहमदिल बनकर समा दो। समाकर शुभ भावना से उस आत्मा के प्रति मन्सा सेवा करते रहो। जब 5 तत्वों के प्रति भी आपकी शुभ भावना है, ये तो फिर भी सहयोगी ब्राह्मण आत्मायें हैं। भले संस्कार के वश कोई उल्टा भी कहता, करता या सुनता है लेकिन आप उस एक को परिवर्तन करो। एक से दो तक, दो से तीन तक ऐसे व्यर्थ बातों की माला न बन जाए।

(त्रिमूर्ति दादियों के अमृत वचन)

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* *मधुबन*

"साक्षीदृष्टा के तख्त पर बैठकर खेल देखने का अभ्यास एकरस स्थिति बना देगा" (गुल्जार दादी जी 2007)

बाबा ने हर स्थान पर कैसे अपने बच्चों को ईश्वरीय सेवा के निमित्त बनाया है, वो इस संगठन को देख स्पष्ट समझ सकते हैं। और हम सबका लक्ष्य एक ही है कि हमें स्व-परिवर्तन से विश्व का परिवर्तन करना है। यह बहुत बड़ा ठेका है, सब ठेकेदार बैठे हैं। इसको निभाने के लिए समय प्रति समय बापदादा हमें इशारा देते रहते हैं। अब उन इशारों को, उस लक्ष्य को लक्षण के रूप में प्रत्यक्ष करना है। हरेक जो भी निमित्त बने हुए विशेष आत्मायें हैं वो यह जरुर समझते हैं कि हमें भी परिवर्तन होना ही है और विश्व को भी परिवर्तन करना ही है। लेकिन बाबा आजकल हमारी चलन और चेहरे से प्रत्यक्ष रूप देखने चाहते हैं क्योंकि लोग

आजकल ज्ञान को इतना कैच नहीं कर सकते हैं जितना चेहरे और चलन से कैच कर सकते हैं। हमारी आन्तरिक भावनायें, आन्तरिक स्मृति-स्वरूप का हरेक को अनुभव है लेकिन बाबा कहते हैं जब बाप की प्रत्यक्षता होगी तब विश्व परिवर्तन होगा।

तो आप सभी यह लक्ष्य तो रखते ही हो कि बाबा को प्रत्यक्ष करना ही है, यह पक्का है? करना ही है, होना ही है या हो जायेगा... समय आयेगा अपने आप हो जायेगा। यह तो नहीं सोचते हो? हमें करना हैं। इस कार्य में मैं अर्जुन हूँ, हरेक यह समझकर आगे बढ़ करके बाबा को प्रत्यक्ष करे। और बाबा ने भी यही कहा कि बहुत समय से बाबा वायदे कराते रहते हैं और बच्चे भी वायदे सदा लिख करके देते ही हैं। तो बाबा यही चाहता है कि मेरी एक ही आशा है और उस आशा के दीपक तो हम सब हैं ही। तो सभी मिलकर ऐसा संगठन बनाओ जो कोई भी आवे तो ऐसा समझे कि यह दुनिया में रहते हुए भी कोई साधारण मनुष्य नहीं हैं, यह कोई अलौकिक हैं। अलौकिक आत्मा का हर कर्म ऑटोमेटिकली अलौकिक हो जायेगा। तो अभी लक्ष्य और लक्षण में आप देखें कि उसमें अभी तक अन्तर है या समान हो गये हैं? तो इस बारी जो भी भट्ठियाँ हुई उसमें हम सबने मिल करके बाबा से यही वायदा किया कि बाबा आप हमारे से जो भी आशायें रखते हो, वह हम अवश्य पूरा करके दिखायेंगे।

जैसे बाबा कहते मेरा एक एक बच्चा राजा बच्चा है, तो राजा का अर्थ ही है कन्ट्रोलिंग पॉवर और रूलिंग पॉवर। तो बाबा यही चाहता है कि इसमें पहले खुद को प्रत्यक्ष करके फिर बाबा को प्रत्यक्ष करे। तो इस भट्ठी में यह संकल्प साकार करना ही है। आप पाण्डव नहीं करेंगे तो कौन करेगा? तो हम सब इस भट्ठी में मिलके वैसे भी बेल्ट बांधते हैं तो हलचल बंद हो जाती है, ऐसे हम भी दृढ़ संकल्प की बेल्ट बांध करके हलचल के बजाए अचल बन जायें। तो हम अचल बनकरके बाबा की आशाओं को प्रत्यक्ष कर्म में लायेंगे। संकल्प तो करते हैं लेकिन कर्म में भी वही संकल्प प्रैक्टिकल में आये, उसका अटेन्शन रखकरके हम बाबा को दिखायेंगे कि बाबा, अभी जो आप चाहते हैं, जो उम्मीदें हमारे में रखते हैं, वो हम प्रैक्टिकल कर रहे हैं। बाबा कहते हैं मेरे बच्चे राजा बच्चा बन गये हैं, राज्य अधिकारी बन गये हैं, तो इस भट्ठी का लक्ष्य यह है, संगठन इसलिए बुलाया जाता है, संगठन की भी शक्ति होती है। लेकिन उसमें भी देखना है कि एक दो के तरफ देखते भी आत्मा रूप का पाठ बहुत पक्का करना है। यह आत्मा बाबा का बच्चा है। पुरुषार्थी महारथी है। उस दृष्टि से हम एक दो में संगठन में चलेंगे और अभ्यास करेंगे और बार-बार अपने को चेक करेंगे।

तो इस भट्ठी में यह ट्रायल करनी है कि मैं आत्मा और यह मेरे साथी कर्मचारी कर्मेन्द्रियाँ जो हैं, उसको चला करके बाबा ने जो हमें साक्षीदृष्टा का तख्त (सीट) दिया है, उस पर बैठ करके खेल देखने का अभ्यास करें। समय हमारा सदा ही याद में और फरिश्ते की लाइफ में जाये। अभी तो कोई आपको सोचने की जरुरत नहीं है, सब सेवा की कारोबार से फ्री होके बैठे हैं तो भट्ठी माना ही परिवर्तन होना है। परिवर्तन का प्रैक्टिकल हम सबूत दें। अच्छा - ओम् शान्ति।

दादी जानकी जी के अनमोल वचन (धारणायुक्त क्लास)

अपनी बुद्धि समर्पण कर दो तो उसमें दिव्यता आ जायेगी, साधारणता खत्म हो जायेगी (2006)

आज बाबा ने बड़े प्यार से याद की विधि सिखाई है। कल कहा याद की हॉबी हो, आज कहता है कैसे याद में रहो, क्योंकि बुद्धि विस्तार में फैली हुई है, फैलाने की आदत पड़ी है पर सब कुछ समा कर, जाल को हप करके याद में बैठ जाओ। याद के लिए बाबा रोज़ नई बात समझाता है। हर बात की प्रैक्टिस करके देखी है।

सेकण्ड में सब बात समेट कर, समा कर अशरीरी पन की स्थिति में रहना, देह, सम्बन्ध, दुनिया कुछ याद न आये। आप मरे मर गई दुनिया – ऐसे अनुभव हो। बाबा कहते हैं मैं तुम्हारे बुलाने से नहीं आया हूँ, अपने टाइम पर आया हूँ। किसके कहने पर नहीं आया हूँ, टाइम पर आया हूँ घर ले जाने। घर का रास्ता जो बाबा बताता है कोई नहीं बता सकता। न सिर्फ रास्ता बताता है साथ लेकर जाता है, कितनी मेहरबानी हमारे ऊपर की है। सारा दिन विचार करो, कभी 10-15 मिनट बैठकर विचार करके देखो, ऐसी बातों का विचार करने से अन्तर्मन में बहुत स्पष्टीकरण होता है कि अब मुझे क्या करने का है।

अपनी बुद्धि को ऐसे समर्पण कर दो, जिसको मैं मेरी कहती हूँ पहले वह समर्पण करो। समर्पण किया है तो बुद्धि में दिव्यता आई है, जरा भी साधारणता नहीं रहती। बाबा फौरन रिटर्न में देता है, जैसे धन समर्पण करते हैं तो भी रिटर्न करता है, तन से करते हैं तो सुख महसूस होता है। शुरू से लेकर आज दिन तक जिसने दिल से यज्ञ की सेवा की है तो खुशी, शक्ति बहुत मिली है। सब अनुभवी बैठे हैं। यज्ञ सेवा जिन्होंने धन से की, धन सफल किया है तो कितना सुख शान्ति मिली है, उनकी सब पीढ़ियां सुखी हैं। हमने आंखों से देखा है खुद तो सुखी रहे हैं पीढ़ियां भी सुखी रही हैं। जिन्होंने तन से हड्डी सेवायें की हैं बड़े सुखी हैं। हम सुखी हैं तो हमें देख अनेक सुखी हैं।

हमारा चेहरा खुशनुम: ऐसा हो जो किसको पूछने की जरूरत न पड़े तुम कैसी हो? ठीक हो? कभी मम्मा बाबा से पूछ नहीं सकते कि आप कैसे हो? इतनी मम्मा बाबा की बातें याद आती हैं। मम्मा बाम्बे में थी, तबियत ठीक नहीं थी, जब मम्मा के सामने गई तो कहा जनक तुम ठीक हो? कहते ही मेरे को अशरीरी बना दिया। वह सीन आज दिन तक सामने आती है। इतना अशरीरी भव का वरदान मिला हुआ है। देह से न्यारे रहने का इतना अटेन्शन रखा है। कोई सम्बन्ध, सम्पत्ति की आकर्षण न रहे वह ध्यान रखना पड़ेगा।

परमेश्वर ही मेरा परमपिता परमात्मा है, जब परमेश्वर शब्द कहते हैं तो पार ब्रह्म में रहने वाला याद आ जाता है। बुद्धि में जो नॉलेज है वह इतनी यूज़फुल है, जैसे अंधे की आंख खुल जाए, बुद्धि का ताला खुल जाए। भाग्यविधाता भगवान, हम उसकी गोदी में बैठे हैं। भागीरथ कहते इतना अन्दर से नशा चढ़ता है, जैसे मस्तक पर चढ़कर बैठ जाओ। आये थे गोद में, बैठ गये मस्तक पर। एडाप्ट किया गोद बिठाया, मस्तक पर बिठाने के लिए। गंगा बहती भली, एक जगह नहीं रह सकते। गंगा नाम लेते ही नशा चढ़ा पतित-पावनी हूँ। भगवान कहे, जिसने बाप के मस्तक को सदा देखा वह कहाँ रहेंगे? हमारे बाप का मस्तक ऐसा है जो किसी का हो नहीं सकता। दुनिया में कोई ऐसा व्यक्ति नहीं देखा जिसका ऐसा शरीर हो, मस्तक इतना चमकता हो। सारे कल्प में ऐसा नहीं दिखाई पड़ा होगा। बाबा का 84 जन्म ही शरीर ऐसा अच्छा रहा होगा। लास्ट जन्म से लगता है पास्ट जन्म कैसे होंगे। फर्स्ट श्रीकृष्ण का है, लास्ट और फर्स्ट, ब्रह्मा सो विष्णु, विष्णु सो ब्रह्मा, जानते हैं कैसे विष्णु की नाभी से ब्रह्मा निकला। चित्रकारों ने चित्र बनाया लेकिन हमने आंखों से देखा है। शिवबाबा इसमें बैठा है आंखों से दिखाई पड़ रहा है, फिर मंथन कर मुरली सुनाने आ रहा है। हमारे मम्मा बाबा कैसे लक्ष्मी-नारायण बनें, वह आंखों से देख रहे हैं। शिवबाबा का अवतरण कैसे हुआ हम लोगों ने देखा। वन्डर है, बच्चे थोड़ेही देखते बाप कैसे पैदा हुआ। रचता रचना का ज्ञान बाबा के सिवाए कोई दे नहीं सकता। सृष्टि के आदि मध्य अन्त का ज्ञान बाप जाने बच्चे जानें और न जाने कोई, यह सब बातें अन्दर सिमरण करने से याद ऑटोमेटिक अच्छी हो जाती है।

कर्मातीत स्थिति किसको कहा जायेगा, वह अभी शरीर में रहते अनुभव करेंगे। यह अनुभव करके शरीर छोड़ेंगे, क्या है आप सबका विचार? मीटिंग तो अच्छी हो जायेगी, सेवायें हुई हैं, होंगी। लाखों तो क्या कईयों को मैसेज मिल गया है। लेकिन बाबा जो कहते हैं - अभी सम्पन्न बन जाओ, होम वर्क मिला है, सम्पन्न सम्पूर्ण बनो। पहले सम्पन्न बनें तब सम्पूर्ण बनेंगे।

पहले कर्मातीत बनेंगे या पहले सम्पन्न बनेंगे? क्या पहले सम्पन्न बनकर के कर्मातीत बनेंगे फिर सम्पूर्ण बनेंगे? क्या समझते हैं? कर्मबन्धन तो कोई है नहीं, विकर्म का तो ख्याल भी नहीं आ सकता। भगवानुवाच सर्वोत्तम ब्राह्मण कुल भूषण हो, यह नशा उतरा नहीं है। तुम मेरे नूरे जहान हो, जहान के नूर हो, साहेबजादे हो, शहजादे तो सतयुग में होंगे... वह कोई बड़ी बात नहीं है, अभी साहेबजादे हो। यह घोट-घोट कर अमृत पिलाया है।

मुरली ऐसे सुनें जैसे अभी बाबा मेरे को सुना रहा है। अभी मैं बाबा से सुन रही हूँ, पढ़ रही हूँ, तो भी बाबा मेरे को सुना रहा है तो अतीन्द्रिय सुखमय जो जीवन है, ज्ञान गुण शक्तियों से सम्पन्न है। ज्ञान से गुण हैं, शक्तियां हैं। तो सम्पन्नता और कर्मातीत स्थिति मेरे विचार से दोनों इकट्ठे होंगे। कोई किसके साथ हिसाब-किताब नहीं, शरीर में जैसे निमित्त मात्र बैठे हैं। बाबा ने सेवा अर्थ बिठाया है, स्थिति इतनी ऊंची लाइट हाउस बनी रहे, इसलिए शरीर में बैठे हैं। जहाँ जायें वहाँ लाइट हाउस मिसल खड़े हैं, और कुछ करते नहीं हैं, दूर वालों की नज़र अपने आप जाती है।

अकर्ता, अभोक्ता, असोचता, करते हुए भी अकर्ता, दु:ख सुख की भोगना से दूर, प्रशंसा में खुश न हो जाएं। असोचता, कभी सोच में न पड़ जाएं... ऐसी स्थिति बनाने की इच्छा जिसकी तेज होगी उसको बाबा अनुभव करायेगा। हम थोड़े में खुश न हो जाएं। सम्पन्न बनना है तो थोड़े में खुश नहीं होना है। न दिलशिकस्त होना है। अच्छा - ओम् शान्ति।

दादी जानकी जी का दूसरा क्लास

सच्ची दिल वाले ही बाबा के दिलतख्त पर बैठते हैं, बुद्धि का भटकना बंद हो जाता है

बाबा कहते हैं बच्चे बुद्धि को समर्पण करो, बुद्धि समर्पण हुई तो स्वच्छ बनी। आज फिर बाबा ने कहा है बाप को प्यार से याद करो, माया कहती है मेरे को प्यार करो। माया अपनी तरफ खींचती है, बाबा अपने तरफ खींचता है। हमारी बातें बहुत शार्ट और सिम्पल हैं। भक्ति मार्ग में तो बहुत बातें हैं, अर्थ कुछ भी नहीं है। बाबा यथार्थ बातें समझाते हैं। जिसने अपने ऊपर मेहनत करके आत्मा को स्वच्छ बनाया है, थोड़ी मेहनत की है तो सफलता सदा साथ देती है। मैं आत्मा न सिर्फ शरीर से न्यारी हूँ, परन्तु शुद्ध आत्मा हूँ। प्युरिटी में नम्बरवन। पहले पता नहीं था - मन क्यों भटकता है, कहाँ भटकता है, बुद्धि क्यों नहीं एकाग्र होती है। यह सब स्पष्ट ज्ञान होने से और सबको अवाइड कर बाबा से योग लगाते हैं।

ज्ञान दाता जैसे ज्ञान दे रहा है तो मन शान्त हो जाता है, बुद्धि ठिकाने पर आ जाती है। देने वाले दाता की शक्ति महसूस होती है। यह निज ज्ञान जब तक निज स्वरूप में नहीं आया हैं तब तक बुद्धि का भटकना बंद नहीं होता। मुझ आत्मा का निजी स्वरूप क्या है, परमात्मा ने बताया है अनादि और आदि तू आत्मा कैसी थी।

ज्ञान माना ही अपने ऊपर ध्यान देना। गीता ज्ञान के 18 अध्याय के 18 शब्द मुझे याद हैं। नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप तक। पहला शब्द हे अर्जुन धर्म क्षेत्रे, कर्म क्षेत्रे। यह कौरव हैं, यह पाण्डव हैं। तुम अपने को देख। भगवान आत्मा को आदि स्मृति दिलाते हैं कि तुम कौरव हो या पाण्डव हो? पाण्डवों को निश्यय है प्रभू तू है तो सब कुछ है। धुन लगाई है प्रभू तू है तो सब कुछ है। कौरव संस्कार खत्म हो जाते हैं। जब तक आत्मा के कौरव संस्कार नहीं खत्म हुए हैं तब तक पाण्डव नहीं कहला सकते। कौरव माना पैसा और पोजीशन। पाण्डव भल थोड़े हैं परन्तु हर एक की विशेषता अपनी है। तो अपने से पूछे मैं कौन?

इस संगठन में आते अपने आपको देखते, भाग्यवान हैं जो ऐसे संगठन में हाज़िर होने का भी भाग्य मिला है। ऐसे संगठन से अनेक प्रकार की बातें जानने, सीखने और अनुभव करने में सहज कर देती हैं। सीखने की भावना पैदा करती हैं, नहीं तो फ़ुर्सत नहीं है अपने को बैठकर देखने की। मेरे को अपने लिए क्या करने का है, सेवा के प्लैन तो अच्छे बनते हैं, सेवा तो हुई पड़ी है। इतना निश्चय है - हुआ ही पड़ा है। बाकी मुझे क्या करना है? बाबा के दिलतख्त पर बैठना है। जब तक बाबा के दिलतख्त पर नहीं बैठे हैं तब तक विश्व का राज्य नहीं मिल सकता है। तो अपने आपको देखें कि मैं बाबा के दिलतख्त पर हूँ? बाबा के दिल में मैं समाई हूँ? मेरे दिल में बाबा है, दिलतख्त पर वही बैठ सकते हैं जिनकी दिल सच्ची है। सच्ची दिल से साहेब राज़ी। कर्म में, सम्बन्ध में सच्चाई है। सच्चे दिल में परसेन्टेज नहीं होती, 100 परसेन्ट प्यार है लेकिन 100 परसेन्ट मेरे पास सच्चाई है? जो सबके अन्दर से निकले यह बहुत सच्ची है, सच्चाई से नाच रहा है, सच्चा है, हल्का है। कभी भी भारी पन का अनुभव न हो। कोई वैल्यु की शक्ति की कमी है तो भारी है, सच्चाई काम नहीं करती है। भगवान सत्य है, वह सत्यता काम करती है।

तो आज बाबा ने कर्मों की गुह्य गति पर ध्यान खिंचवाया है। बच्चे कर्मों की गुह्य गति को जान। सतयुगी राजाई का ख्याल कर, वह संस्कार अभी भरना, तो सतकर्म श्रेष्ठ कर्म से होगा। कलियुग की वहाँ निशानी नहीं होगी। संगम हमको उड़ती कला में लेकर जाता है। अच्छा - ओम् शान्ति।

(दादी प्रकाशमणि जी के अमृतवचन)

चैतन्य शिव शक्तियों का यादगार - नवरात्रि

1) विशेष नवरात्रि के दिनों में हम कल्प पहले वाली शिवशक्तियों का आह्वान करते हैं। सर्वशक्तिमान बाप ने गुप्त रूप में हम शक्तियों को शक्ति दी है। असुर संहारिनी, भक्तों की रक्षा करने वाली हम सब शिव शक्तियां हैं। शिव-शक्ति अर्थात् शिव परमात्मा से प्राप्त हुई शक्ति जिससे हम असुर संहारनी बने हैं। स्वयं से अथवा सारे विश्व से आसुरी वृत्तियों को समाप्त करने का काम हमारा है। शक्तियों का ही गायन है असुर संहारनी, दूसरे तरफ शीतला देवी का भी गायन है। तो सभी को भक्तों का

आह्वान सुनाई दे रहा है? भक्त हमें पुकार रहे हैं, चिल्ला रहे हैं ओ माँ, ओ माँ,... इन शक्तियों को ब्रह्मचारिनी कन्या ही दिखलाया है। आज जब मैं आपके सामने आई तो मैं भक्तों की आवाज सुनकर आई थी। प्यारे बाबा के गुण गा रही थी - ओ सर्वशक्तिमान बाबा, आपने हमें कितना गुप्त रूप में रखा है, जिनका आज भक्त गायन कर रहे हैं। स्वयं से पूछना है - क्या हम वही पतित संस्कारों को संहार करने वाली शक्ति हूँ? शक्तियों को सहस्त्र भुजाधारी दिखलाते हैं, तो क्या हम ऐसी शक्तियां हैं?

2) सवेरे योग में यही महसूस हो रहा था कि हमारे हाथ में ज्ञान के अस्त्र-शस्त्र हैं, योग का स्वदर्शन चक्र है। दैवी गुण रूपी कमल फूल है, भिन्न-भिन्न भुजा में भिन्न-भिन्न अस्त्र-शस्त्र हैं। ये हमारा यादगार है कि हम सदा शस्त्रधारी भुजायें हैं। कोई भुजा हिलती-डुलती तो नहीं है? बाबा ने हमें अष्ट शक्तियाँ दी हैं। क्या ऐसे कहेंगे कि 6 शक्तियां तो हैं, दो नहीं हैं?

3) हम असुर संहारिनी हैं तो स्वयं में देखो कि आसक्ति रूपी असुर तो नहीं है? मान-शान रूपी असुर तो नहीं है? मोह रूपी असुर तो नहीं है? शक्तियां कहें मेरे में छोटा मोटा असुर है तो क्या उन्हें असुर संहारिनी कहेंगे? शक्तियाँ जितनी संहारी हैं उतनी कल्याणी हैं। निर्भय, निर्वैर हैं। हमारे में भय है? हमारा किसी से वैर है? शक्तियों की महिमा में ऐसा नहीं कहा जाता है कि भक्तों की वैरी हैं, नहीं। असुरों की संहारी भक्तों की रखवाली करने वाली हैं। हम सबका उद्धार करने वाली उद्धार-मूर्त शक्तियाँ हैं तो हमारे में सर्व के प्रति स्नेह, सहयोग की भावना रहती है या किसी के प्रति घृणा की, ईर्ष्या की, नफ़रत की भावना भी रहती है? हमें बाबा से सर्व शक्ति लेकर सबको जीयदान देना है, प्राणदान देना है। बाबा ने हमें कितना महान बनाया है, कितना हमारी भक्त महिमा करते, कितना हमारा मान-शान-गायन आधाकल्प से भक्त गाते हैं! जब ऐसी ऊंची सीट पर बैठ अपना यादगार देखते तो बाबा के गुण गाते। जग मेरे मान-शान का गायन करता, मेरे बाबा के साथ मेरा गायन है। हमें कहा ही गया है जगत की मातायें, जगत अम्बा, दुर्गा काली, शक्ति। मैं जगत की माँ हूँ, सब मेरे लिए छोटे बच्चे हैं क्योंकि बाबा कहते कि बिचारों को यही ज्ञान नहीं है कि इनका बाप कौन है। बिचारे उनको कहा जाता है, जिनको ज्ञान नहीं। बाबा ने हमें त्रिकालदर्शी, महान से महान बनाया है, कितनी ऊंची सीट पर बाबा ने बिठाया है।

4) भाषण करने से पहले देखो मेरी स्टेज ठीक है, जो भक्त मेरा साक्षात्कार करें! जब तक हम स्वयं की सीट पर या स्टेज पर नहीं बैठे हैं तब तक हम दूसरों की क्या सेवा करेंगे! अगर सदा मेरी वह स्थिति नहीं तो भक्त मेरा क्या साक्षात्कार करेंगे? सबको सर्विस का बहुत शौक रहता है, जोश रहता है। सेवा के साथ-साथ स्वयं के स्थिति की सीट भी ठीक हैं? जैसे लॉ और लव का बैलेन्स, जीवन में बराबर रखते हैं, वैसे सेवा के साथ-साथ स्वयं की स्टेज है? प्लैन बनायेंगे तन-मन-धन से सर्विस में लग जायेंगे, परन्तु कई बार अपनी स्टेज खो बैठेंगे। उसको भाषण के लिए कहा मुझे नहीं कहा, इसे सब चान्स देते हैं, मुझे नहीं। बड़े का मान रखते हैं, छोटों का नहीं। पता नहीं कितने सवाल सर्विस की स्टेज के साथ उठाते हैं। गये स्टेज तैयार करने और अपनी स्टेज खराब कर दी। उस समय अपनी स्टेज को तैयार करने का नहीं रहता। अरे तुम अपना रिकार्ड क्यों खराब करते हो? चले अनेकों का सुधार करने और अपना बिगाड़ कर लिया।

5) सदा यह नशा रहे कि हम वही शेरणी शक्तियां हैं। हम ऐसे ऊंचे स्थान पर बैठे हैं। हमारा बाबा कितना महान है, फिर भी कितना निर्मान है। सदा ये सोचो हम गॉडली स्टूडेन्ट हैं। सब सब्जेक्ट में हमारा बैलेन्स बराबर हो। हमारी चार सबजेक्ट हैं:- 1-ज्ञान 2- योग 3-दैवीगुणों की धारणा और 4-सेवा । लेकिन दिखाई देता है पहले सेवा और ज्ञान फिर बाद में योग और धारणा इसलिए कभी उदासी के दास बनेंगे, कभी मूड आफ के दास बनेंगे।

6) बाबा ने हमें बनाया है - 1. सहज-योगी, 2. ज्ञानी-योगी 3. शीतल-योगी। योगी सदैव हर्षित मुख रहते हैं। हम संगम के देवी-देवतायें हैं, अगर हमारे में अभी धारणा है तो भविष्य में भी रहेगी। देवताई संस्कार अभी ही हम भर रहे हैं। हमारे अन्दर से आसुरी संस्कार खत्म हो गये हैं या कभी जोश आ जाता है?

7) हम पतित-पावन बाप की सन्तान हैं। स्वयं से पूछो मैं पतित-पावन की सन्तान कभी हमारे अन्दर पतित संकल्प तो नहीं उठते हैं? किसी पतित आत्मा का वायब्रेशन तो नहीं आता है? मैं असुर संहारिनी हूँ, असुर कहीं मेरा तो संहार नहीं करते? आज की दुनिया में कीचक जैसे लोग घूमते रहते हैं, जिस बात के पीछे लोग हैं हम उनसे ऊपर हैं?

8) दुनिया समझती है इस पतित दुनिया में कोई बाल-ब्रह्माचारी बनके दिखावे, प्रवृत्ति में पावन रहकर दिखावे, यह तो बहुत मुश्किल है इसलिए संन्यासी जंगल में चले जाते हैं। प्यारे बाबा ने हम नारियों को आगे बढ़ाया है। औरों ने तो ठुकराया है और बाबा कहते तुम शक्तियां स्वर्ग के द्वार खोलने के निमित्त हो। हमारा बहुत बड़ा गुलदस्ता है। अगर इस शक्ति के झुण्ड के बीच कोई भी एक गन्दे वायब्रेशन में बैठा हो तो इस झुण्ड के बीच वो क्या दिखाई देगा? एक के नाम के कारण सभी का नाम बदनाम होता है, इसलिए हे शक्तियां अपने झुण्ड को सदा सेफ रखो। ऐसा न हो जो नाम बदनाम हो। कीचक के 20 मुख होते इसलिए उनसे बहुत सम्भाल करो। भोली-भाली बनकर नहीं रहना है। अच्छा। ओम् शान्ति।